कक्षा : तृतीय – जैन धर्म प्रथमा (परीक्षा 23 जुलाई, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) समकित का कौनसा अतिचार नहीं है-
(क) जिन वचन में शंका की हो (ख) पर दर्शन की आकांक्षा की हो
(ग) पर सम्पत्ति को हड़पा हो (घ) पर पाखण्डी की प्रशंसा की हो (ग)

(b) आठवें स्थूल का नाम हैं-
(क) प्राणातिपात (ख) दिशिव्रत
(ग) अनर्थदण्ड (घ) कर्मादान (ग)

(c) कर्मादान के अतिचार हैं-
(क) 14 (ख) 15
(ग) 60 (घ) 99 (ख)

(d) ग्यारहवाँ पाप स्थान है-
(क) राग (ख) कलह
(ग) अभ्याख्यान (घ) द्वेष (घ)

(e) चउरिन्द्रिय जीव का उदाहरण है-
(क) मच्छर (ख) सर्प
(ग) लीख (घ) सीप (क)

(f) इन्द्रियों के आधार पर जीवों के बनाये हुए समूह को क्या कहते हैं-
(क) शरीर (ख) जाति
(ग) काया (घ) गति (ख)

(g) इच्छामि खमासमणो के पाठ से वंदना करते समय एक पाठ में कितने आवर्तन दिये जाते हैं-
(क) 06 (ख) 12
(ग) 36 (घ) 03 (क)

(h) ''जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय।'' पंक्ति में कौनसी भावना का उल्लेख हुआ है-
(क) एकत्व भावना (ख) अशुचि भावना
(ग) अन्यत्व भावना (घ) अनित्य भावना (ग)

(i) भगवान ऋषभदेव की जन्म कल्याणक तिथि है-
(क) माघ कृष्णा त्रयोदशी (ख) चैत्र शुक्ला अष्टमी
(ग) आषाढ़ कृष्णा अष्टमी (घ) चैत्र कृष्णा अष्टमी (घ)

(j) विविध विचारों से समकित में दृढ़ होना है-
(क) भावना (ख) प्रभावना
(ग) विनय (घ) यतना (क)

(k) सभी द्रव्यों को अवगाहन-जगह देने में निमित्त बनता है-
(क) धर्मास्तिकाय (ख) अधर्मास्तिकाय
(ग) आकाशास्तिकाय (घ) जीवास्तिकाय (ग)

(l) हिंसादि दुष्ट आचरण से चिंतन की एकाग्रता कहलाती है-
(क) धर्मध्यान (ख) आर्त्तध्यान
(ग) रौद्र ध्यान (घ) शुक्ल ध्यान (ग)

(m) उपशम सम्यक्त्व से गिरती हुई अवस्था को कहते हैं-
(क) सास्वादन गुणस्थान (ख) निवृत्ति बादर गुणस्थान
(ग) सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान (घ) उपशांत मोहनीय गुणस्थान (क)

(n) विनय का भेद नहीं है-
(क) क्रियावान की भक्ति करना (ख) सिद्ध भगवान की भक्ति करना
(ग) चतुर्विध संघ की भक्ति करना (घ) अधर्मी की भक्ति करना (घ)

(o) ब्राह्मण वर्ण की स्थापना किसने की-
(क) भगवान ऋषभदेव ने (ख) भरत चक्रवर्ती ने
(ग) बाहुबली ने (घ) सुन्दरी ने (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) सामायिक करेमि भन्ते पाठ से पारी जाती है। (नहीं)

(b) प्रतिक्रमण से व्रतपालन में तेजस्विता आती है। (हाँ)

(c) सांयकालीन प्रतिक्रमण में 'देवसिय' शब्द का प्रयोग होता है। (हाँ)

(d) हिंसा के साधन अधिकरण कहलाते हैं। (हाँ)

(e) देव गति के जीव दिव्य भौतिक ऋद्धियों से मुक्त होते हैं। (नहीं)

(f) कार्मण शरीर सिद्धों में पाया जाता है। (नहीं)

(g) मध्यम वंदना तिक्खुत्तो के पाठ से की जाती है। (हाँ)

(h) 'परदर्शन की इच्छा नहीं करना' निःशंकित होता है। (नहीं)

(i) अरिहन्त सुर-असुरों से पूजित होते हैं। (हाँ)

(j) भगवान ऋषभदेव के साथ चार हजार पुरुषों ने दीक्षा ली। (हाँ)

(k) जीव चेतना लक्षण से मुक्त है। (नहीं)

(l) गुणियों के मलिन वेश को देखकर घृणा करना 'वितिगिच्छा' है। (हाँ)

(m) सड़न-गलन-विध्वंसन पुद्गलास्तिकाय का मुख्य गुण नहीं है। (नहीं)

(n) अंक 21 के भंग 9 होते हैं। (हाँ)

(o) उक्कलिया, मण्डलिया तेउकाय के जीवों का शरीर है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	आगमे तिविहे	(क) कर्म	वच्चामेलियं
(b)	संलेखना	(ख) अनुकम्पा	मरणासंसप्पओगे
(c)	पृथ्वीकाय	(ग) कायक्लेश	कंकर
(d)	पर्याप्ति	(घ) वइक्कमं	श्वासोच्छ्वास
(e)	चौदह पूर्वधारी	(च) अयोध्या	आहारक शरीर
(f)	आयुष्य	(छ) तीर्थंकर	बलप्राण
(g)	योग	(ज) वच्चामेलियं	पन्द्रह
(h)	इच्छामि खमासमणो	(झ) बलप्राण	वइक्कमं
(i)	तप	(य) पन्द्रह	कायक्लेश
(j)	दर्शनाचार	(र) आहारक शरीर	उपबृंहा
(k)	विनीता	(ल) श्वासोच्छ्वास	अयोध्या
(l)	लक्षण	(व) मृषावाद	अनुकम्पा
(m)	सयोगी केवली गुणस्थान	(क्ष) मरणासंसप्पओगे	तीर्थंकर
(n)	कूड़ा लेख	(त्र) उपबृंहा	मृषावाद
(o)	नाम	(ज्ञ) कंकर	कर्म

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a)	मैं प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के शासन काल में ही होता हूँ।	छेदोपस्थापनीय चारित्र
(b)	मेरे क्षय से अव्याबाध सुख प्रकट होता है।	वेदनीय कर्म
(c)	पर्यावरण शुद्धि में मेरी विशेष भूमिका रही है।	तुलसी
(d)	मेरा मूल नाम आवश्यक सूत्र है।	प्रतिक्रमण
(e)	'भण्ड कुचेष्टा की हो' मेरा अतिचार है।	अनर्थदण्ड
(f)	मेरी गति के जीवों का शरीर प्रायः तिरछा, टेढा-मेढा होता है।	तिर्यंच गति
(g)	मेरी चेतना शक्ति के द्वारा जीव वस्तु के सामान्य एवं विशेष रूप का ज्ञान करता है।	उपयोग
(h)	मेरे क्षय होने पर अमरत्व गुण प्रकट होता है।	आयुष्य कर्म
(i)	मेरे माध्यम से जीव शब्द रूप आदि को ग्रहण करता है।	इन्द्रिय
(j)	मेरे कारण आत्मा पर कर्म पुद्गलों का आगमन होता है।	आश्रव
(k)	मैं कविता रचकर धर्म की उन्नति करता हूँ।	कवि प्रभावक
(l)	मैंने भगवान ऋषभदेव को ईख का रस आहार के रूप में बहराया।	राजकुमार श्रेयांस
(m)	मैं दसवाँ व्रत हूँ।	देसावगासिक
(n)	मेरे विषय में संदेह करना शंका है।	तत्त्व
(o)	मैं आठवाँ कर्मादान हूँ।	रसवाणिज्जे

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) कल्याणक किनके होते हैं और क्यों ?

उ. कल्याणक तीर्थंकरों के ही होते हैं, क्योंकि इनका च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण स्व-पर के कल्याणकारी होते हैं।

(b) प्रभावना किसे कहते हैं ?

उ. जैन धर्म की उन्नत्ति एवं प्रचार के लिए प्रयत्न करना प्रभावना हैं।

(c) सामायिक चारित्र किसे कहते हैं ?

उ. राग-द्वेष रहित आत्मा के समता मूलक क्रियानुष्ठान को 'सामायिक चारित्र' कहते हैं।

(d) लेश्या कितनी होती हैं ? नाम लिखिए।

उ. छह लेश्या- 1. कृष्ण लेश्या, 2. नील लेश्या, 3. कापोत लेश्या, 4. तेजो लेश्या, 5. पद्म लेश्या, 6. शुक्ल लेश्या।

(e) जैन धर्म में प्रतिपादित कौन-कौन से व्रत हैं जो पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रख सकते हैं ? उनके नाम लिखिए।

उ. अहिंसा, अपरिग्रह, भोगोपभोग परिणामव्रत, अनर्थदण्ड विरमणव्रत आदि।

(f) विनयाचार और व्यंजनाचार का अर्थ लिखिए।

उ. विनयाचार- ज्ञानदाता गुरु का विनय करना।
व्यंजनाचार- सूत्र के पाठ का शुद्ध उच्चारण करना।

(g) पूजा निंदा.....क्या कहना। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. पूजा निंदा में सम रहते, नित वीतरागता में रमते।
जहाँ समकित दीप जले नित ही, उनकी समता का क्या कहना।।

(h) उपाध्याय.....है नमस्कार। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. उपाध्याय अध्ययन कराते, भ्रांति मिटाते ज्ञान बढ़ाते।
द्वादशांग आधार परमेष्ठी, करते हैं नमस्कार।।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3 = (24)**

(a) अनुकम्पा किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उ. दुःखी जीवों के दुःख मिटाने की इच्छा अनुकम्पा है। द्रव्य और भाव के भेद से अनुकम्पा दो प्रकार की है। शक्तिपूर्वक दुःखी जीवों के दुःख दूर करना द्रव्य अनुकम्पा है। दुःखी को देखकर दया से हृदय कोमल हो जाना भाव अनुकम्पा है।

(b) पन्द्रह कर्मादानों के नाम लिखिए।

उ.
1.इंगालकम्मे	2. वणकम्मे	3. साडीकम्मे	4. भाडीकम्मे
5. फोडीकम्मे	6. दंतवाणिज्जे	7. लक्खवाणिज्जे	8. रसवाणिज्जे
9. केसवाणिज्जे	10. विसवाणिज्जे	11. जंतपीलणकम्मे	12. निलंछणकम्मे
13. दवग्गिदावणया	14. सर दह तलाय सोसणया		15. असई जण पोसणया।

(c) उस्सुत्तो.....सुए सामाइए। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छियव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे तह दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए समाइए।

(d) जिण पण्णत्तं.....सद्दहणा। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. जिण पण्णत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहियं।
परमत्थ संथवो वा, सुदिट्ठ परमत्थ सेवणा वावि।
वावण्ण कुदंसण वज्जणा, य सम्मत्त सद्दहणा।।

(e) निर्जरा भावना के दोहे लिखिए।

उ. ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर।।
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार।।

(f) आभ्यन्तर तप के कोई 4 भेद अर्थ सहित लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई भी चार भेद मान्य-
1. प्रायश्चित्त- लगे हुए दोषों की आलोचना करके प्रायश्चित्त लेकर आत्मा को शुद्ध करना।
2. विनय- गुरु आदि का भक्तियुक्त अभ्युत्थानादि से आदर, सत्कार एवं विनय करना।
3. वैयावृत्य- आचार्यादि की सेवा करना।
4. स्वाध्याय- शास्त्र की वाचना, पृच्छना आदि करना।
5. ध्यान- मन को एकाग्र करके शुभ विचारों में लगाना।
6. व्युत्सर्ग- काया के व्यापार का त्याग करना।

(g) उत्कृष्ट वंदना किस पाठ से की जाती है ? शिष्य उत्कृष्ट वंदना कैसे करता है ?

उ. उत्कृष्ट वन्दना 'इच्छामि खमासमणो' के पाठ से की जाती है। शिष्य गुरुदेव से अन्तर्मन से विस्तार पूर्वक क्षमायाचना करते हुए उन्हें वंदन करते हैं।

(h) भगवान ऋषभदेव इस युग के प्रथम आदि पुरुष व शिक्षा शास्त्री थे। कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उ. भगवान ऋषभदेव ने मनुष्यों को असहाय और प्रकृति पर निर्भर रहने के बदले पुरुषार्थ का पाठ पढ़ाया। प्रकृति को नियंत्रण में रखकर उनसे मनचाहा काम लेना सिखाया। उन्होंने स्त्रियों को चौसठ कलाएँ व पुरुषों को बहत्तर कलाएँ भिन्न-भिन्न रूप से सिखलाई।